ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-1*June-2015

समाज सेवी संस्थाओं में एन.सी.सी. की भूमिका

सोनिया बिन्द्रा
रीडर एवं प्रभारी,
संगीत विभाग,
एन.के.बी.एम.जी. डिग्री कॉलेज,
चन्दौसी, सम्भल (उ0प्र0)

सारांश

सामाजिक सेवा भारत की एक प्राचीन परम्पराओं में से एक है। सच्चे हृदय स दूसरे के कार्यों में हाथ बांटना, परस्पर सहानुभूति, सहयोग और संवेदना रखना, एक अच्छे भारतीयों के गुण है। सामाजिक सेवा निःस्वार्थ होकर जनकल्याण के कार्यों में अपनी अर्जित शक्तियों द्वारा पूर्ण रुप से सहयोग देना ही सच्ची सामाजिक सेवा है।

विश्व की कल्याणकारी भावनाओं, सहयोग, सच्ची देश भक्ति व सच्ची देश सेवा, निस्वार्थ भाव से लगन यही सब भाव एक एन.सी.सी. कैडेट के होते है। एन.सी.सी. एक संगठन है, जो स्कूल, विद्यालय व महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के रुप में समाज में कार्य कर रहे है। इस संगठन में डारेक्ट्रेड, बटालियन इत्यादि एन.सी.सी. के मुख्यालय है, जिनके द्वारा एन.सी.सी. का कार्य क्षेत्र का निर्धारण होता है। इस संगठन का मूल उद्देश्य देश सेवा, देश के विकास में सहयोग देश की अखण्डता बनाने में सहयोग, एकता व अनुशासन है।

कुछ गैर सरकारी संस्थायें भी देश के विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रही है, जिन्हें एन.सी.सी. संक्षिप्त नाम से जाना जाता है। इन गैर सरकारी संस्थाओं का भी मूल कार्य क्षेत्र व उद्देश्य देश सेवा, देश की उन्नति में सहयोग, असहायों की मद्द करना है। दोनों ही संगठन देश व समाज के लिये आज अनिवार्य माने जाते है। किस प्रकार यह दोनों संगठन कार्य कर रहे है। कल इनकी देश सेवा की भी जानकारी ले लेगें। इत्यादि के बारे में विस्तृत रुप से देखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : एन.सी.सी., समाज सेवी संस्थायें।

प्रस्तावना

सामाजिक सेवा भारत की एक प्राचीन, परम्पराओं में से एक है। सच्चे हृदय स एक दूसरे के कार्यों में हाथ बटाना, परस्पर सहानुभूति, सहयोग और संवेदना रखना, एक अच्छे भारतीयों के गुण हैं। सामाजिक सेवा निस्वार्थ होकर जनकल्याण के कार्यों में अपनी अर्जित शक्तियों द्वारा पूर्ण रुप से सहयोग देना ही सच्ची सामाजिक सेवा है।

अगर इस सामाजिक सेवा में राष्ट्रहित की भावना के साथ–साथ साम्प्रदायिक सौहार्द और अखिल विश्व की कल्याणकारी भावनाओं का समन्वय भी हो जाता है, तो सच्ची देश सेवा यही होगी और यही सच्ची देश सेवा राष्ट्रीय कैडेट कोर कर रही है। जहाँ एक ओर गैर सरकारी संस्थाओं की विस्तृत चर्चा समाज में होती रहती है। वही दूसरी ओर इन गैर सरकारी संस्थाओं का परिचय भी मिलता है। किस प्रकार इस संगठनों का निर्माण हुआ, किस प्रकार संगठनों का संचालन समाज के लोग सहकारी समिति के रुप में करते हैं। विभिन्न प्रकार की विकास की योजनाओं के लिये धन एकत्रित कर उन्हें चलाते हैं। भारत मे इस समय हजारों की संख्या में ये गैर सरकारी संस्थायें कार्य कर रही हैं। इन संस्थाओं के साथ मिलकर एन.सी.सी. के कैडेट भी समाज में फैली बुराईयों को दूर करने में अपना निरन्तर सहयोग दे रहे है और समाज को निरन्तर जागरूक करने की कोशिश कर रहे है। विभिन्न प्रकार की समस्याओं, कुरीतियों के खिलाफ रैली वगेरहा निकालकर जैसे–

जागरूकता अभियान रैलियों के माध्यम से– समाज में फैली विभिन्न समस्याओं, कुरीतियों, प्रथाओं, आडम्बरों को दूर करने के लिए एन.सी.सी. केडेट आम लोगों को जागरूक कर रहे हैं, ये जागरूकता समाज में दो प्रकार की हो सकती है–

1. सामाजिक जागरूकता
2. पर्यावरण जागरूकता

सामाजिक जागरूकता

इसके अर्न्तगत हम सामाजिक चेतना लोगों में उत्पन्न कर सकते हैं। जिससे सभी आम आदमी इन समस्याओं, बुराईयों, कुरीतियों के प्रति सचेत हो जाऐ। जैसे–

1. रक्तदान– कैडेट स्वयं भी रक्तदान कर रहे हैं और औरों को भी प्रेरित कर रहे हैं।
2. पल्स पोलियो
3. ट्रैफिक कन्ट्रोल
4. लड़कियों की सुरक्षा (भ्रूण हत्या के विरुद्ध रैली निकालकर, प्रचार–प्रसार करके इत्यादि)
5. एच.आई.वी. एड्स के प्रति जागरूकता रैली निकालकर
6. नशीले पदार्थों के विरुद्ध अभियान
7. साक्षरता अभियान (इच वन ए टीच वन) का सिद्धान्त अपनाकर
8. जनसंख्या नियन्त्रण, परिवार नियोजन के महत्व को बताते हुए।
9. दहेज विरोधी अभियान
10. गावों को गोद लेकर, उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास।
11. वृद्ध आश्रम में सभी का सम्बल बनने की कोशिश के द्वारा।
12. श्रमदान–जगह–जगह श्रमदान करके।
13. प्राकृतिक आपदा में राहत कार्य करके (जैसे–बाढ़, भूकम्प आदि)
14. नेत्रहीन स्कूलों में कार्य करके।
15. शपथ द्वारा कि वो समाज में फैली समस्याओं को दूर करने में सहयोग देंगे।

पर्यावरण जागरूकता रैली

प्राकृतिक चीजों को नष्ट होने से बचाने के लिये व्यर्थ में उनका व्यय होने से बचाना इस जागरूकता रैली का उद्देश्य है, जैसे–

1. बिजली की बचत करके
2. पृथ्वी की सुरक्षा
3. प्रदूषण रोको या प्रदूषण को दूर करने में सहयोग करके
4. वृक्षारोपण, हरा–भरा हमारा देश का नारा बुलन्द करके इत्यादि।

आज समय–समय पर ये सभी कार्य एन.सी.सी. कैडेट के द्वारा समाज में फैली समस्याओं के प्रति रैली वगैरहा निकालकर व आम जनता को जागरूक करके कर भी रहे है, एन.सी.सी. और गैर सरकारी संस्थाओं के ही कुछ और बिन्दुओं पर जिसकी विस्तृत रुपरेखा निम्नवत् है–

एन.सी.सी. व गैर सरकारी संस्थाओं का आपसी सम्बन्ध

अभी तक एन.सी.सी. और गैर सरकारी संस्थाओं का आपस में उचित प्रकार से परिचय व सम्बन्ध नही हुआ है। जहाँ गैर सरकारी संस्थायें, समाज में फैली अनेकों बुराईयों व समस्याओं के विरुद्ध जागरूक होकर कार्य कर रही है, व असहायों की मद्द भी कर रही है, लेकिन दोनों का ही आपस में समन्वय नहीं हो पाया है। जरा सोचिए कि दोनों का कार्य क्षेत्र समाज में फैली बुराईयों, कुरीतियों व समस्याओं का उन्मूलन करना है, लेकिन अलग–अलग कार्य करने से न तो उसका परिणाम ही शत प्रतिशत आ रहा है ना ही, उचित प्रकार से असहायों को मद्द मिल पा रही है और कभी अल्प उदाहरणों में जहाँ भी दोनों एक साथ कार्य करने के लिये समाज में एकत्रित हुये, तो उसका सारा श्रेय केवल गैर सरकारी संस्थाओं को मिला, ऐसा समझा जाता है, और एन.सी.सी. उनके पीछे परछाई बनकर ही रह गई। इस तरह का विचार हमें त्यागकर आगे आना होगा। दोनों समाज सेवी संस्थायें हैं, दोनों का अपना अस्तित्व है, दोनों को मिलजुल कर ही कार्य करने पर बल देना होगा। एक प्रकार से ये संस्थायें अगर एक विशाल वृक्ष है तो इनकी पुष्ट जड़ें हमारे एन.सी.सी. कैडेट हैं जो 13 वर्ष से 25 वर्ष तक के लड़के–लड़कियाँ है अगर जड़े पुष्ट होगी तो ही पेड़ की शाखायें हरी भरी रह सकती हैं। इसीलिए दोनों को आपस में समन्वय कर समाज की सेवा के लिये दृढ़ संकल्प होना होगा और ये समन्वय निम्न बिन्दओं पर कार्य करके सुदृढ़ रुप से प्रयास किया जा सकता है–

सेमीनार

विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति दोनों मिलकर सेमीनारों का आयोजन कर सकते हैं, जिससे समाज में इन समस्याओं के प्रति चेतना जागरूक हो। सेमीनार में विचारों के आदान–प्रदान से हो सकता है कि हमें समस्या का मूल समाधान प्राप्त हो सके। इस प्रकार के सेमीनार समाज में फैली ज्वलन्त समस्याओं को आधार मानकर किये जाने चाहिए, जिसमें वक्ता एन.सी.सी. कैडेट व गैर सरकारी समस्याओं के सदस्य ही हों।

एक दूसरे (एन.सी.सी. व गैर सरकारी संस्थायें) का प्रचार–प्रसार मिलजुल कर करें

समाज में अभी भी आम आदमी इन गैर सरकारी संस्थाओं के बारे में नही जानता, लेकिन एन.सी.सी. को जानता है, क्योंकि एन.सी.सी. का कार्य क्षेत्र, विद्यालय व महाविद्यालय होते हैं। एन.सी.सी. कैडेट ही इन संस्थाओं के बारे में आम आदमी को बता सकता है कि ये सस्थायें किस प्रकार अपना कार्य करती हैं? किस प्रकार इन संस्थाओं से मद्द ली जा सकती है, इत्यादि।

दृष्टिकोण को विस्तार दें

अगर समाज में एक समस्या पर दोनों ने कार्य किया, तो ये सोचे कि एन.सी.सी. ने ज्यादा और गैर सरकारी संस्थाओं ने कम कार्य किया। अपने इस संर्कीण दृष्टिकोण को व्यापक विस्तार दें, मूल मंत्र तो केवल है, कि समाज से एक समस्या का अन्त करना, शायद दोनों (एन.सी.सी., गैर सरकारी संस्थायें) का उद्देश्य एक ही भी होना चाहिये।

अन्त में दोनों (एन.सी.सी., गैर सरकारी संस्थाओं) को मिलकर ही कार्य करना चाहिय, अगर ये गैर सरकारी संस्थायें, शरीर है, तो उसके हाथ, पैर व आँखें एन.सी.सी. कैडेट हैं, जो नये स्फूर्ति, नवीन सोच, व विस्तृत कार्य क्षेत्र में हैं। विभिन्न राज्यों, विभिन्न डारेक्ट्रड (निदेशक) सभी इस दृष्टिकोण पर विचार करें, कि दोनों का आपस में मिलकर कार्य करना ही समाज के लिये लाभप्रद होगा। समाज में हम आपस में इन कार्यों का कौन–सा परिवर्तन कर सकते हैं और अलग–अलग रहकर कार्य करने से ना तो इन सामाजिक व पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण होगा और ना ही असहायों की पूर्ण रुप से मद्द की जा सकती है, अगर इन गैर समाज सेवी संस्थाओं का मूलमंत्र समाज सेवा है, तो अनुशासन व एकता एन.सी.सी. का उद्देश्य है। एक साथ मिलकर प्रत्येक कठिन से कठिन समस्याओं को दूर करने का प्रयास व कठोर परिश्रम करके सफलता प्राप्त की जा सकती है।

अगर एन.सी.सी. कैडेट प्रतिवर्ष वृक्षारोपण करत हैं, लाखों पौधे लगाने के बाद भी इन्हें मुड़कर नहीं देख पाते हैं, कि कितने पेड़ उनके पीछे मरे, और कितने जीये, लेकिन इनको देखभाल की जिम्मेदारी ये गैर सरकारी संस्थायें संभाल सकती है। रक्तदान सभी कैडेट करते हैं, और औरों को रक्त देने के लिए प्रेरित भी करते हैं। ये रक्त सही रुप में प्रयोग हो, जिसे रक्त की जरुरत हो उसे मिल पाने का कार्य गैर सरकारी संस्थायें कर सकती है, इत्यादि। असंख्य कार्य है, जो मिलकर किये जा सकते हैं।

निष्कर्ष

उचित रुप में गैर सरकारी संस्थायें तथा एन.सी. सी. दोनों का ही एक मूल उद्देश्य है देश की उन्नति में भागीदारी व निश्छल भाव से दोनों देश की सेवा करते है। अतः दोनों को ही अपने–अपने कर्तव्यों व कार्यों का विभाजन ना करके सहयोग से ही समाज, देश की सेवा करनी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सामाजिक नियन्त्रण एवं सामाजिक परिवर्तन–डा. जे. एस. राठौर।
2 सामाजिक नियन्त्रण एवं सामाजिक परिवर्तन–डा. रवीन्द्र नाथ मुखर्जी।
3 हैन्ड बुक ऑफ एन.सी.सी.–मेजर आर0सी0 मिश्र
4 भारत को जानो – डा. एम.पी. गुप्ता